॥ओ३म्॥

उप सर्प मातरं भूमिम्॥ (ऋ. 10/18/10) मातृभूमि की सेवा करो।

आर्य समाज के संस्थापक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

युवा निर्माण

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश का मासिक मुखपत्र
(सार्वदेशिक आर्य वीर दल की एक इकाई)

युवकों का होता जहाँ चरित्र निर्माण, आर्य वीर दल है उसका नाम

वर्ष- 1, अंक- 8
माह- जनवरी 2018
पृष्ठ- 16

सृष्टि संवत्- 1,96,08,53,118
विक्रमी संवत्- 2074
दयानन्दाब्द- 194

प्रति शुल्क- 15/-
वार्षिक शुल्क-150/-

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

(संकल्प दिवस)

जितेन्द्र भाटिया

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश गत् वर्षों से आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा आयोजित "**स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस**" शोभायात्रा में विभिन्न व्यवस्थाओं का निर्वहन, विभिन्न मार्गों में परिवहन व्यवस्था, दिशा-निर्देशन में सहयोग करता है। दल अपने प्रतिष्ठित अधिकारी एवं शिक्षकों तथा कार्यकर्ताओं के साथ बैठक के माध्यम से कार्यक्रम की बारीकियों पर चर्चा करता है। **शोभायात्रा को भव्य बनाने हेतु लगभग 1500 आर्यवीरों के विभिन्न प्रकार के प्रदर्शन, परेड संचलन, आसनों के स्तूप, रस्सा मलखम, लकड़ी मलखम एवं आत्मरक्षा के प्रदर्शन से आर्य विचार धारा को जन-जन तक पहुँचाते हैं।** इस वर्ष भी आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए दिल्ली की सभी शाखाओं के साथ विशाल शोभा यात्रा में सम्मिलित हुआ। दल द्वारा अजमेरी गेट पर इस शोभायात्रा में प्रथम बार अपना स्वागत् मंच बनाया गया। विभिन्न क्षेत्रों से आर्य विद्वानों, सन्यासियों, आर्यजनों, आर्यवीरों एवं आर्य वीरांगनाओं का पुष्पवर्षा करते हुए भव्य स्वागत किया गया। स्वागत मंच का संचालन श्रीमान् बृहस्पति आर्य द्वारा किया गया। वरिष्ठ अधिकारियों के द्वारा शोभायात्रा मार्ग पर आने वाले मुख्य स्थानों पर यातायात नियन्त्रण के साथ शोभायात्रा को सुचारू रूप से संचालित करने में सहयोग किया गया। प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी दल द्वारा श्रेष्ठ शाखा प्रदर्शन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। निर्णायक रूप में श्रीमान् विरेश आर्य (उपसंचालक) एवं धर्मवीर आर्य (उप प्रधान शिक्षक) को नियुक्त किया गया। प्रतियोगिता परिणाम के अन्तर्गत श्रेष्ठ शाखा प्रदर्शन का **प्रथम स्थान-रामा विहार शाखा** (श्री लक्ष्य आर्य), **द्वितीय स्थान-प्रीत विहार शाखा** (प्रेम आर्य), **तृतीय स्थान-नजफगढ़ शाखा** (पं रोहताश आर्य) एवं **सान्त्वना पुरस्कार कीर्ति नगर शाखा** (राजू आर्य) को चयनित किया गया। दल द्वारा दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में शाखायें संचालित की जाती हैं। इन शाखाओं में दल द्वारा शिक्षकों के माध्यम से आर्य वीरों को शिक्षा प्रदान की जाती है। जिसके अन्तर्गत् बौद्धिक शिक्षा, शारीरिक शिक्षा व सेवा कार्य शिक्षा युवाओं को दी जाती है। इस प्रकार के आर्य समाज एवं संस्थाओं के अन्तर्गत होने वाले समाज व राष्ट्रहित कायक्रमों में आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश सदैव सेवार्थ हेतु तैयार रहता है।

महामहिम राष्ट्रपति जी से भेंट

जितेन्द्र भाटिया

कलैण्डर वर्ष 2018 के प्रथम दिवस पर माननीय **महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी** को राष्ट्रपति भवन में आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के कोषाध्यक्ष **श्रीमान् जितेन्द्र भाटिया जी ने अपनी धर्मपत्नी स्नेह भाटिया** (सह संचालिका आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश) के साथ महर्षि दयानन्द जी का जीवन चरित्र (जो कि उर्दू में लक्ष्मण जी आर्योपदेशक द्वारा लिखित और राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा अनुवादित है) सप्रेम भेंट किया।

वीरांगना प्रशिक्षण कार्यशाला

आचार्या अमृता आर्या

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में शुक्रवार 5 जनवरी से रविवार 7 जनवरी तक त्री-दिवसीय **"आर्य वीरांगना शाखा नायिका प्रशिक्षण कार्यशाला"** का आयोजन आर्य समाज मन्दिर बिड़ला लाइन में किया गया। इस कार्यशाला में दिल्ली के विभिन्न स्थानों से 25 आर्य वीरांगनाओं ने भाग लिया। इन आर्य वीरांगनाओं को संगठन के इतिहास के साथ-साथ शाखा व शिविर संचालित करने की बारीकियाँ, शारीरिक पाठ्यक्रम, बौद्धिक प्रशिक्षण, उपासना विधि, यज्ञ एवं सन्ध्या का प्रशिक्षण और आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षक रूप में आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के प्रधान शिक्षक श्री दिनेश आर्य को आमन्त्रित किया गया। कार्यशाला का शुभारम्भ 5 जनवरी को प्रातः 11 बजे आर्य समाज के प्रधान श्री मनवीर सिंह राणा जी के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण से किया गया। प्रातः 5 बजे से रात्रि 10 बजे तक कार्यशाला की दिनचर्या के अन्तर्गत आर्य वीरांगनाओं को प्रशिक्षण दिया गया। आर्य वीरांगना दल से श्रीमती शारदा आर्या (संचालिका), श्रीमती आचार्या अमृता आर्या (मन्त्राणी), श्रीमती पुष्पा महावर जी (संरक्षिका) एवं सुनीता जावा (कोषाध्यक्ष) ने पूरा समय आर्य वीरांगनाओं के साथ रहते हुए कार्यशाला को सफल बनाया। कार्यशाला के समापन व दीक्षान्त समारोह में कार्यक्रम के अध्यक्ष रूप में श्री धर्मपाल आर्य (प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) मुख्य अतिथि श्री मनवीर सिंह राणा, श्री अश्वनी आर्य एवं योगाचार्य हेमेन्द्र आर्य (सहारनपुर) जी उपस्थित रहे। **ऋषि ऋण को चुकाना है** के संकल्प के साथ गीत के माध्यम से आर्य वीरांगनाओं ने अपने भावों को प्रकट किया। शारीरिक प्रदर्शन में आसन स्तूप, विशेष नियुद्धम, भाले के दाव, आत्मरक्षा आदि का प्रदर्शन किया गया। कार्यशाला का लाभ बताते हुए आर्य वीरांगनाओं ने अपने विचारों में कहा कि इस प्रकार की कार्यशालायें समय-समय पर आयोजित होनी चाहिए। साथ ही कार्यशाला से प्रशिक्षण प्राप्त कर आर्य वीरांगनाओं ने नई शाखा लगाने का संकल्प लिया। सहारनपुर से आये हुए आचार्य हेमेन्द्र जी ने जीवन में योग का महत्व बताते हुए आर्य वीरांगनाओं को शुभाशीष प्रदान किया। श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में अनुशासन का महत्व बताते हुए कहा कि जो अनुशासन का पालन करता है वह मनुष्य, आर्य समाज, आर्य संस्था दिन दूनी-रात चौगुनी तरक्की करता है। अन्त में संगठन की संचालिका श्रीमती शारदा आर्या जी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगठन सशक्तिकरण चिन्तन शिविर

दिनेश आर्य (प्रधान शिक्षक, आ.वी.द.दि.प्र.)

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में मंगलवार 26 दिसम्बर से शनिवार 30 दिसम्बर 2017 तक शीतकालीन संगठन सशक्तीकरण चिन्तन एवं भ्रमण शिविर महर्षि कण्व की तपस्थली कण्वाश्रम में आयोजित किया गया। 27 दिसम्बर सांयकाल श्रीमान् आचार्य जयन्त जी ने जंगल के बारे में जानकारी देते हुए ऋषि कण्व आश्रम का इतिहास व महत्व से अवगत् कराया। साथ ही अपने जीवन काल में किये हुए संघर्ष के बारे में भी जानकारी दी। कण्व ऋषि कुटीर जहाँ वीर बालक भरत का जन्म हुआ था देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। रात्रि कालीन कक्षा में शाखाओं में क्या दिक्कत शाखानायकों व शिक्षकों के सामने आती है उन पर चर्चा परिचर्चा व निवारण सत्र चला जिसमें श्री जगवीर आर्य, श्री रोहताश आर्य व श्री दिनेश आर्य जी द्वारा आर्यवीरों को स्पष्ट उत्तर देकर सन्तुष्ट किया गया। सभी आर्य- वीरों ने इस सत्र की प्रशंसा की। सुन्दर यज्ञ व संध्या का क्रियान्वित प्रशिक्षण पं0 रोहताश आर्य जी के सान्निध्य में लिया। पश्चात् सभी आर्यवीरों के बीच श्री दिनेश आर्य जी द्वारा आदर्श आर्यवीर भजन मण्डली द्वारा ईश्वर भक्ति व संगठन के गीतों की प्रस्तुति की गई। इसी बीच हमारे संगठन के सह-संचालक श्री सुन्दर आर्य जी सभी के बीच उपस्थित हुए और जीवन का अभिन्न अंग व्यक्तित्व विकास (पर्सनैलिटी डेवलपमैंट) के विषय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वास्तव में हमारे व्यक्तित्व विकास व सर्वांगीण विकास के नायक हमारे माता-पिता ही होते हैं जो हमें जीवन जीने का मंत्र देते हैं। लेकिन हमने उनकी शिक्षा को ग्रहण नहीं किया। इसी कारण हम व्यक्तित्व विकास के लिए क्लास लेते हैं हजारों रुपये खराब कर देते हैं।

हरिद्वार से आये हुए श्री सन्दीप जी द्वारा देशभक्ति विषय पर बौद्धिक सत्र लिया गया। देशभक्ति पर बोलते हुए श्री सन्दीप जी द्वारा बताया गया कि जो अपने प्रति भक्ति नहीं रखता है वह राष्ट्र व देश भक्त नहीं हो सकता। देशभक्ति ईश्वर प्रदत्त वैदिक आदेश है। वेदों में भक्ति सूक्त के द्वारा देशभक्ति का आदेश व आज्ञा दी गई है। स्वामी दयानन्द द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में बताया गया कि विदेशी राजा कितना भी हितैषी व दुलार व माता के समान प्यार करने वाला क्यों न हो उसे कतई स्वीकार नहीं करना चाहिये। इसके दूसरी तरफ स्वदेशी राजा कष्ट देने वाला क्यों न हो स्वदेशी राजा ही देश का हितैषी होता है। अतः कहा गया कि हमारे देश का राजा स्वदेशी ही होना चाहिये।

शेष पृष्ठ 12 पर....

दिल्ली की शाखाओं के विभिन्न कार्यक्रम

प्रीत विहार शाखा- आर्य समाज प्रीत विहार के प्रांगण में चलने वाली शाखा के आर्यवीरों ने दिल्ली स्टेट मलखम प्रतियोगिता में अपना परचम लहराते हुये पुरस्कार प्राप्त किया और साथ ही मलखम की विभिन्न कलाओं का शौर्य प्रदर्शन दिल्ली के प्रगति मैदान स्थित मेले में प्रस्तुत किया। जिसके अन्तर्गत **खेलमन्त्री श्री विजय गोयल जी** ने आर्यवीरों की सराहना करते हुये आशीर्वाद दिया। आर्यवीरों का यह समस्त कार्यक्रम व्यायाम शिक्षक श्री प्रेम आर्य, श्री सूरज आर्य के दिशा-निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

-विनीत आर्य (व्यायाम शिक्षक)

रानी बाग शाखा- आर्य वीर दल की शाखा रानी बाग ने अपने क्षेत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण प्रतियोगिता आयोजित कराई। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के साथ अन्य कई विषयों को लेकर के बच्चों ने अपनी प्रस्तुति दी। इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पाने वाले आर्यवीरों को सम्मानित किया गया। इस प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में श्रीमान् वीरेश आर्य, श्रीमान् वीरेन्द्र आर्य, श्रीमान् आनन्द आचार्य ने अपने विचारों में कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगितायें युवा वर्ग में आगे बढ़ने की क्षमता को विकसित करती हैं। इस प्रतियोगिता का आयोजन श्रीमान् संजय आर्य, सोनू आर्य, ब्र0 संजय आर्य के माध्यम से किया गया।

-सोनू आर्य (उप व्यायाम शिक्षक)

मोती नगर शाखा- आर्य समाज पंजाबी पूर्वी के वार्षिकोत्सव से पूर्व विशाल शोभायात्रा एवं नगर भ्रमण का आयोजन किया गया। इस शोभायात्रा में मोती नगर शाखा के 25 आर्यवीरों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया और विभिन्न स्थानों पर शौर्य प्रदर्शन करते हुये शोभायात्रा को और सुन्दर बनाया। साथ ही इन आर्यवीरों ने विभिन्न व्यवस्थाओं में भी अपना योगदान दिया। इन समस्त आर्यवीरों का नेतृत्व श्री ज्ञानु आर्य एवं श्री रमेश आर्य ने किया।

-बॉबी आर्य (आर्यवीर)

पंजाबी बाग शाखा- आर्य समाज पूर्वी पंजाबी बाग के 39वें वार्षिकोत्सव में विभिन्न व्यवस्थाओं को क्रियान्वित करते हुये पंजाबी बाग शाखा के आर्यवीरों ने विभिन्न स्थानों पर शौर्य प्रदर्शन किया। इसके साथ ही उत्सव के समय विभिन्न सेवा प्रकल्पों में आर्यवीरों ने योगदान किया। उत्सव के अन्तिम दिवस पूर्णाहुति के बाद आर्यवीरों ने शक्ति प्रदर्शन व शौर्य प्रदर्शन किया। इसके साथ ही आर्यवीरों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की भी प्रस्तुति दी। उत्सव के दौरान की गई प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के अन्तर्गत भी आर्यवीरों ने सम्मान प्राप्त किया। आर्यवीरों का यह समस्त कार्यक्रम श्रीमान् आचार्य आनन्द जी के पुरुषार्थ से ही पूर्ण हो पाया। उनके आशीर्वाद से ही यह शाखा नियमित रूप से आर्य समाज में संचालित हो रही है। इस शाखा में श्री मनोज आर्य, श्री मोहित आर्य, श्री उदय आर्य, शाखा के आर्यवीरों को प्राथमिक शिक्षण प्रदान करते हैं।

-दिनेश आर्य (व्यायाम शिक्षक)

कीर्ति नगर शाखा- आर्य समाज कीर्ति नगर में संचालित यह शाखा समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करती है। इसी कड़ी में नवम्बर माह में चार दिवसीय आर्यवीरों एवं आर्य वीरांगनाओं के लिये दैनिक यज्ञ प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत शाखा में आने वाले विभिन्न आर्यवीरों ने दैनिक यज्ञ की विधि सीखी और साथ ही अपने घर में यज्ञ करने का संकल्प लिया। इस शाखा में श्रीमान् सुरेश आर्य, व्यायाम शिक्षक के माध्यम से आर्यवीरों को प्रशिक्षण दिया जाता है।

-राजू आर्य (आर्यवीर)

सुखवीर नगर शाखा- आर्य वीर दल के अन्तर्गत संचालित सुखवीर नगर शाखा के आर्यवीर आजाद आर्य के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य पर यज्ञोपवीत संस्कार एवं सुन्दर यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ पर उपस्थित शाखा के सभी आर्यवीरों ने आजाद आर्य को अपनी शुभकामनायें दीं। यज्ञ के ब्रह्मा रूप में श्री रोहित आर्य (व्यायाम शिक्षक) जी ने संस्कार के बाद सुन्दर कविता के माध्यम से उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनायें दीं। इस अवसर पर निक्की आर्य, जितन्द्र आर्य, सोनू आर्य आदि उपस्थित रहे।

-निक्की आर्य (आर्यवीर)

शोक सन्देश

1. आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के अनन्य सहयोगी एवं वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री रामभरोसे शाह जी के पिताश्री का बुधवार, 10 जनवरी को आकस्मिक निधन हो जाने पर संगठन सहानुभूति व्यक्त करता है और साथ ही ईश्वर से प्रार्थना करता है कि उस पुण्य आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

2. प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के पूर्व बौद्धिकाध्यक्ष श्री ओमवीर शास्त्री जी का 10 जनवरी को आकस्मिक निधन 10 जनवरी को हो जाने पर संगठन सहानुभूति व्यक्त करता है और साथ ही ईश्वर से प्रार्थना करता है कि उस पुण्य आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

3. आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के व्यायाम शिक्षक श्री लक्ष्य आर्य जी के नानाजी श्री सुदर्शन लाल जी का 15 जनवरी को आकस्मिक निधन हो जाने पर संगठन सहानुभूति व्यक्त करता है और साथ ही ईश्वर से प्रार्थना करता है कि उस पुण्य आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

महारानी पद्मावती

अस्मिता के लिए हो गई थी सती,
ऐसी थी अपनी महारानी पद्मावती।
ले हजारों को उसने था जौहर किया,
छोड़ संसार को पा गई सद्गति।
पुण्य गाथा है ये सुन लो चित्तौड़ की,
रानी पद्मा की सुन्दरता बेजोड़ थी।
देख दर्पण में खिलजी था पागल हुआ,
खूबसूरत बला की महारानी थी।
उसको पाने को आतुर हुआ श्वान था,
अपनी ताकत पै भी उसको अभिमान था।
बोला पद्मा को मेरे हवाले करो,
वरना तैयारी कर लीजिये नाश की।

शेर कोई कभी घास खा सकता न,
शेरनी को कोई श्वान पा सकता न।
बोल पद्मा के जब क्षत्रियों ने सुने,
लड़ने को अपनी तलवार झट खींच ली।
इस तरह से भी जब बात चल न सकी,
कायराना चली उसने एक चाल थी।
कैद धोखे से किया रतन सिंह को,
बदले में माँग ली उसने फिर पद्मिनी।
जो लड़ाके थे वो वीरगति पा गये,
देश की रक्षा में काम सब आ गये।
दुष्ट खिलजी पुनः आगे बढ़ने लगा,
किन्तु राणा की सेना भी तैयारी थी।

वीर क्षत्राणी ने पथ ये अपनाया था,
अग्नि का कुण्ड तैयार करवाया था।
ले हजारों को कूदी वो अंगारों में,
गाथा दुनियाँ में मिलती न इससे बड़ी।
जीतने पर हुआ उसको अभिमान था,
किन्तु अन्दर पड़ा सारा वीरान था।
रानी पद्मा के दर्शन तलक न हुए,
बस चितायें वहाँ उसको जलती मिलीं।
ऐसा बलिदान था देश की नारी का,
जिसपै भारत ये सारा ही बलिहारी था।
कीर्ति उसकी जग में रहेगी सदा,
उनके गौरव की **'रोहित'** ने गाथा लिखी।।

रोहित आर्य

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का पुरस्कार समारोह

आर्य वीर दल अलीगढ़ पिछले 22 वर्षों से लगातार महर्षि दयानन्द स्मृति सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित कर रहा है जिसमें कई प्रान्तों के लाखों विद्यार्थी प्रतिवर्ष भाग लेते हैं। **22 वीं प्रतियोगिता का भव्य पुरस्कार वितरण समारोह रविवार, दिनाँक 28 जनवरी 2018 को 51 कुण्डीय महायज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ।** प्रतियोगिता में अव्वल रहने वाले हजारों विद्यार्थियों को पुरस्कार स्वरूप मोटर साइकिल, कम्प्यूटर, फ्रीज, वाशिंग मशीन, टीवी,और वाटर कूलर के साथ-साथ हजारों सान्त्वना पुरस्कार प्रदान किये गये। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष श्री ठाकुर विक्रम सिंह जी ने आशीर्वाद दिया। विशिष्ट अतिथि के रुप में उपजिलाधिकारी पंकज वर्मा एवं आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के कोषाध्यक्ष श्री जितेन्द्र भाटिया जी के साथ दल के अन्य अधिकारी श्री राजेश आर्य (लेखा निरिक्षक), श्री संजय आर्य (संगठन मंत्री), श्री यश आर्य (व्यवस्था मंत्री) कार्यक्रम में उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता के रूप में वेद मन्दिर मथुरा के अधिष्ठाता श्रद्धेय आचार्य स्वदेश जी महाराज ने आशीर्वाद दिया। -**इं. भूदेव शर्मा**

आर्य वीर दल सेवा समिति के कार्य

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश एवं अग्निशमन विभाग दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर सेवा कार्यो को मूर्त्तरूप दिया जाता है। इसके अन्तर्गत् दिल्ली के अनेक क्षेत्रों में सेवा समिति के

सदस्यों ने अपनी सेवायें प्रदान की हैं जिसमें मुख्यत: तिब्बिया कॉलेज के पास वृक्ष पर फँसे बाज को उतारना,

फिल्मिस्तान के पास वृक्ष पर फँसे कौवे को उतारना, यमुना पार स्थित पार्क में पेड़ पर फँसे कौवे को उतारना आदि सेवा कार्य हैं। इन

साहसिक कार्यों को देख कर दिल्ली अग्निशमन विभाग के अधिकारियों ने सेवा समिति के अन्तर्गत् सेवा करने वाले आर्यवीरों की प्रशंसा एवं सम्मान किया।

सेवा भाव

केन्द्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रतिवर्ष रामलीला मैदान में स्वामी दयानन्द बोधोत्सव, निर्वाण दिवस कार्यक्रम आयोजित करती है। इन कार्यक्रमों में गत कई वर्षों से आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश अपनी अहं भूमिका निभाते हुये भोजन व्यस्था, सुरक्षा व्यवस्था व ध्वजारोहण की व्यवस्था को विधिवत् पूर्ण करता है। इस वर्ष भी श्री दिनेश आर्य, के नेतृत्व में पूरे ध्वज स्थल को सुसज्जित करते हुये विधिवत् ध्वजारोहण की प्रक्रिया को पूर्ण किया। साथ ही भोजन व्यवस्था को आर्य वीर दल ने संभाला। सभाओं के विभिन्न कार्यक्रमों में आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश इस प्रकार की जिम्मेदारियों का निर्वहन नि:स्वार्थ भाव से करता आ रहा है।

-धर्मवीर आर्य (व्यायाम शिक्षक)

स्मृति दिवस

सत्य सनातन वेद मन्दिर एवं आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के संयुक्त तत्वावधान में सोमवार, दिनांक 5 जनवरी 2018 को आचार्य ब्र० राज सिंह आर्य जी को तृतीय **"स्मृति दिवस"** के रूप में याद

किया गया। कार्यक्रम उनके निवास स्थान 366, गली रोबिन सिनेमा, पुरानी सब्जी मण्डी पर आयोजित किया गया। शान्ति यज्ञ आचार्य यशपाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ एवं देवेन्द्र आर्य जी के

मधुर गीतों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उपस्थित जनसमूह ने आचार्य राज सिंह जी के कार्यो को और गति देने हेतु संकल्प लिया। इस स्मृति दिवस पर आचार्य राज सिंह जी के परिवार सहित आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के कोषाध्यक्ष श्री जितेन्द्र भाटिया जी, श्री हरि सिंह आर्य (वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक), श्री रोहित आर्य, निक्की आर्य आदि उपस्थित रहे।

देशभक्ति गीत

कसम है नौजवानो तुम्हें नौजवानी की।
कसम है मातृभूमि की गंगा के पानी की।।

इस जन्मभूमि पर न कोई आँख उठाये,
माता की लाज को न कोई लूटने पाये।
दे देना खून देश की मिट्टी न देना तुम,
दुश्मन जो धरे पाँव उसे काट लेना तुम।
जिन्दा रहेगी याद तुम्हारे निशान की।।1।।

चाहे नज़र के सामने चलती हों गोलियां,
मस्ती में चलो झूम के बन-बन के टोलियाँ।
कन्धे से कन्धा जोड़कर दीवार बना लो,
कदम से कदम जोड़कर रफ्तार बना लो।
मंजिल वतन पे मरना है जिंदगानी की।।2।।

अनेक धरती माँ की गोद में सो गये,
अनेक देश के लिए शहीद हो गये।
कसम उन शहीदों की हर माँ के लाल को,
चलने न देंगे देश में दुश्मन की चाल को।
करनी है "पथिक" रक्षा हर हिन्दुस्तानी की।।3।।

।। सौ बार जन्म लेंगे, सौ बार फना होंगे, एहसान दयानन्द के फिर भी न अदा होंगे।।

हमारे प्रेरणा स्रोत

स्वामी देवव्रत सरस्वती

ब्रह्मचर्य की साक्षात् मूर्ति (स्वामी दयानन्द सरस्वती)–स्वामी जी के रूप में मानो स्वयं ब्रह्मचर्य ही मूर्त्तरूप में प्रकट हुआ था। उन्होंने कहा कि सब सुधारों का सुधार ब्रह्मचर्य है। लड़का-लड़की दोनों को ब्रह्मचर्य-रक्षण के लिए माता-पिता द्वारा बाल्यकाल में ही ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करने के लाभ और व्रत को खण्डित कर देने से होने वाली हानियाँ बता देनी चाहिए, जिससे स्वसन्तान किसी के बहकावे में न आयें। स्वयं उनके जीवन में ब्रह्मचर्य की प्रतिष्ठा थी।

एक बार वे मथुरा में विद्याध्ययन करते समय प्रातः काल यमुना की रेती में ध्यानावस्थित बैठे हुए थे। इतने में यमुना स्नान करने के पश्चात् एक देवी ने श्रद्धावश आकर अपना मस्तक उनके चरणों में झुका दिया। गीले बालों के स्पर्श से दयानन्द एकदम चौंक पड़े और माता-माता कहते हुए वहाँ से उठ खड़े हुए। वे कभी स्त्री स्पर्श नहीं करते थे, अतः इसका प्रायश्चित करने के लिए गोवर्धन की ओर गये तथा तीन दिन निराहार रहकर ईश्वर के ध्यान में लगे रहे। जब गुरु विरजानन्द जी को अनुपस्थित रहने का कारण पता चला तब दण्डी जी का हृदय अपने इस शिष्य के प्रायश्चित को जान कर द्रवित हो उठा। उन्होंने उनकी बहुत प्रशंसा की।

अन्धकार से मुक्ति (स्वामी श्रद्धानन्द)–जालन्धर में रहकर मुंशीराम वकालत की तैयारी कर रहे थे। उस समय उन्होंने परीक्षा निकट होने के कारण लाहौर जाने का कार्यक्रम बनाया। मित्र मण्डली ने इस अवसर पर भोजों का आयोजन किया। अण्डे, मांस, शराब का दौर जमकर चला। एक दिन एक बड़े वकील ने भोज पर बुलाया। उसने इतनी शराब पी कि आपे से बाहर होकर एक युवती का शील भंग करने को उतारू हो गया। युवती की चीखें सुन मुंशीराम ने धक्का देकर दरवाजा खोला और बलपूर्वक अपने शराबी मित्र को वहाँ से अलग किया। शराब के प्रति तीव्र घृणा के भाव उत्पन्न हुए। अपने कमरे में जहाँ बोतल खुली हुई रखी थी, मुंशीराम ने एक गिलास भरा और मन में कहा कि इसे आज आखिरी बार पीता हूँ, आगे कभी हाथ न लगाऊँगा। उसी समय उसके मानस में दण्ड धारण किये हुए कौपीनधारी स्वामी दयानन्द का चित्र घूम गया। स्वामी जी मानो कह रहे हों कि मुंशीराम! क्या अब भी ईश्वर पर तेरा विश्वास नहीं होगा? उसने आँखें मलीं तो वहाँ पर कुछ भी दिखलाई नहीं दिया। बुद्धि पर छाया तमोगुण का पर्दा टूट गया। वे तुरन्त उठे और मद्य से भरा गिलास और बोतल सड़क के साथ लगती दीवार पर फेंक कर मारी। आज उनका जीवन पूर्णतः बदल चुका था। कालान्तर में यही मुंशीराम आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध सन्यासी **स्वामी श्रद्धानन्द** के नाम से विख्यात हुए।

धर्म रक्षक (राम)– वनवास का समाचार जान लक्ष्मण श्रीराम के पास आये और कहने लगे कि निश्चित ही महाराजा दशरथ की बुद्धि वृद्धावस्था के कारण क्षीण हो गई है। आपके वनगमन के समाचार को जब तक दूसरे लोग जान पायें, उससे पहले ही आप अयोध्या का सिंहासन अपने अधीन कर लें। मैं धनुष-वाण लेकर खड़ा रहता हूँ। इसी प्रकार लंका में युद्ध करते हुए जब मेघनाद ने कृत्रिम सीता का वध हनुमान एवं दूसरे वानर वीरों के सामने कर दिया तब यह समाचार सुनकर श्रीराम मूर्च्छित हो गये उस समय लक्ष्मण ने कहा कि मैं देखता हूँ कि आप सदृश धर्मात्माजन विविध कष्टों को भोग रहे हैं, उधर अधर्मात्मा रावण सब सुखों से युक्त हो हमें पीड़ित कर रहा है। मुझे यह पूर्ण विश्वास हो गया है कि धर्म के स्थान पर पुरुषार्थ कर धन प्राप्त करना ही सुखों का मूल है। व्यक्ति धन के द्वारा ही धर्म कर पाता है। निर्धन व्यक्ति के सभी मनोरथ बेकार होते हैं। जो लोग धर्म का आचरण करते हुए तप कर रहे हैं, उन पुरुषों का यह लोक अर्थाभाव के कारण कष्टमय हो जाता है, यह स्पष्ट देखा जा सकता है। वही अर्थ इन दुर्दिनों में आपके पास उसी भाँति दिखलाई नहीं दे रहा है जैसे आकाश में बादल घिर आने पर ग्रहों एवं नक्षत्रों के दर्शन नहीं होते।

लक्ष्मण के वचन सुनकर श्रीराम ने कहा–लक्ष्मण! धर्म के परिणामस्वरूप धर्म, अर्थ, काम इन तीनों की की प्राप्ति होती है, इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है। जैसे पति के अधीन रहने वाली भार्या धर्म, अर्थ, काम तीनों की प्राप्ति में सहायक होती है। पंचमहायज्ञों के अनुष्ठान द्वारा धर्म में, मनोनुकूल होने से काम में और पुत्रवती होने से अर्थसंग्रह में सहायक होती है वैसे ही धर्म, धन और काम के संग्रह में सहायक है। जिस कर्म में धर्म, अर्थ, काम ये तीनों सम्मिलित न भी हों, परन्तु जिससे धर्म बनता हो वही कर्म करना चाहिए। धर्म को छोड़ केवल अर्थ-संग्रह करने वाले से लोग द्वेष करने लगते हैं। ऐसे ही केवल कामासक्ति लोक में प्रशंसित नहीं होती।

इस तरह श्रीराम का जीवन-चरित्र जिधर से भी देखें, सभी ओर से मर्यादित दिखाई देता है। वे समुद्र जैसे गम्भीर, धीर, वीर और प्रजावत्सल हैं। इसीलिए कवि को कहना पड़ा–

राम तुम्हारा चरित, स्वयं ही काव्य है,
कोई कवि बन जाय, सहज संभाव्य है।।

महाराणा प्रताप के अन्तिम क्षण–महाराणा प्रताप को केवल 22 वर्ष राज्य करने का समय मिला। 57 वर्ष की आयु में ही राजस्थान की भूमि पर खिला यह पुष्प समय से पहले ही कुम्हला गया। अन्तिम दिन स्वयं राजकुमार अमर सिंह और सामन्तगण उनके पास खड़े थे। महाराणा के प्राण शरीर को छोड़ नहीं रहे थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि महाराणा किसी मार्मिक पीड़ा से आहत हैं। उनकी ऐसी अवस्था देख

कर सरदार बहुत दुःखी हुए। आखिर में सलूम्बर के रावत ने पूछा- महाराज क्या कारण है आपके प्राण शान्ति के साथ इस शरीर को छोड़ नहीं रहे हैं। प्रताप ने अपने हृदय के उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं अपने पुत्र अमर सिंह का स्वभाव जानता हूँ। यह आराम पसन्द है, इसलिए मुझे आशा नहीं है कि आपत्ति सहकर यह मेवाड़ के गौरव की रक्षा कर सके। यदि आप मेरे पीछे मेवाड़ के गौरव को सुरक्षित रखने का प्रण करें तो मेरी आत्मा शान्ति के साथ इस शरीर को छोड़ सकती है। सरदारों एवं राजकुमार अमर सिंह ने तलवारें हाथ में लेकर बप्पा रावल की गद्दी की कसम खाकर कहा-हे महाराणा! हम प्रतिज्ञा करते हैं कि मरते दम तक मेवाड़ के गौरव को सुरक्षित रखेंगे। महाराणा ने विस्फारित नयनों से इस दृश्य को देखा और सन्तुष्ट हो गये। थोड़ी देर में ही उनका आत्मा शरीर को त्याग कर निकल गया। 19 जनवरी 1597 ई. को वह दिव्य ज्योति संसार से बुझ गई।

पंजाब केसरी लाला लाजपत राय-1888 ई. में प्रयाग में काँग्रेस का अधिवेशन बुलाया गया। लालाजी सरकार द्वारा लगाये गये प्रतिबन्ध की परवाह न करते हुए इस अधिवेशन में सम्मिलित हुए। डॉ. पट्टाभि सीतारमैया ने इस अधिवेशन की समीक्षा करते हुए लिखा-''निस्सन्देह लालाजी दूरदर्शी पुरुष थे। जिन दिनों काँग्रेस की सारी कार्यवाही अंग्रेजी में होती थी, लाला लाजपत राय ने हिन्दुस्तानी भाषा (हिन्दी) का प्रयोग किया। उन्होंने यह बतला दिया कि यदि हमें काँग्रेस को आगे बढ़ाना है तो उसे जन-साधारण तक पहुँचाने का प्रयत्न करना होगा।'' जब 1905 ई. में बनारस में काँग्रेस का अधिवेशन हुआ तब विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का प्रस्ताव पास किया गया। उसका अनुमोदन करते हुए लालाजी ने यह घोषणा की-**''आजादी यह हमारा अधिकार है, अँग्रेजों से भीख माँगने की वस्तु नहीं है।''** इसी वर्ष राष्ट्रीय काँग्रेस ने लालाजी तथा गोपाल कृष्ण गोखले को ब्रिटिश पार्लियामेण्ट में हिन्दुस्तान की प्रजा का केस प्रस्तुत करने के लिए भेजा। उस समय लालाजी ने गरज कर कहा-''मैं यहाँ ब्रिटिश प्रजा या सरकार से कोई भीख माँगने नहीं आया हूँ। मैं यहाँ सिर्फ यह बताने के लिए आया हूँ कि तुम्हारा साम्राज्य हिन्दुस्तान की प्रजा के साथ किस प्रकार का बर्ताव करके उसे लूट रहा है।'' यहीं आपकी भेंट श्यामजी कृष्ण वर्मा से हुई। इंग्लैण्ड से वे यूरोप के दूसरे देशों में भी गये और देखा कि उन लोगों में पराधीन भारत के लिए अच्छी भावना नहीं है। यहीं से उनके विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया और उन्होंने देश को आजाद कराने का दृढ़ संकल्प ले लिया तथा काँग्रेस में गरम दल के सदस्य के रूप में गिने जाने लगे। नरम दल के नेता गोपाल कृष्ण गोखले, दादा भाई नौरोजी थे और गरम दल में लोकमान्य तिलक, लाला लाजपत राय तथा विपिन चन्द्र पाल थे, जिन्हें लाल-बाल-पाल के नाम से लोग सम्बोधित करते थे। सारा राष्ट्र उनकी जय-जयकार से गूँज उठा।

नेता सुभाष का सेवा कार्य-सेवा परम धर्म है जो योगियों को ही अगम्य है। कलकत्ता में एक बार हैजे का भयंकर रोग उत्पन्न हो गया। इसने नगर के अनेक भागों को अपने लपेटे में ले लिया। लोग निरन्तर कालकलवित होने लगे। सरकार हाथ-पर-हाथ धरे बैठी रही। नगर के लोगों का हाहाकार सुनकर किशोर सुभाष से नहीं रहा गया। उन्होंने अपने साथियों की टोली बनाई और गन्दी बस्तियों में जाकर सफाई और औषध वितरण करने लगे। अमीरों के बालकों को सेवा करते देख निर्धन बस्ती के लोगों ने समझा कि ये बच्चे हमारा मजाक करने और जले पर नमक छिड़कने के लिए आते हैं। नगर के प्रसिद्ध गुण्डे हैदर के साथ कुछ लोगों ने मिलकर इस टोली का विरोध करना शुरू कर दिया और उनके सेवा कार्य में बाधा डालने लगे, परन्तु सुभाष की टोली उनके विरोध से विचलित नहीं हुई। धारा के प्रतिकूल होने पर ही नाविक के धैर्य की परीक्षा होती है। एक दिन हैजे ने हैदर के घर पर भी आक्रमण कर दिया। वह वैद्य-डॉक्टरों के पास दौड़ता हुआ गया, परन्तु कोई नहीं आया। निराश होकर जब वह घर लौटा तो क्या देखता है कि बालकों का वही दल जिसका वह विरोध करता था, उसके घर की सफाई में जुटा हुआ है। कुछ सफाई कर रहे हैं और एक रोगी को औषधि दे रहा है, दूसरा उसे आश्वासन दे रहा है। बालकों के इस निश्छल सेवा-भाव को देख उस गुण्डे का जी भर आया। उसने मन में कहा कि जिनसे मैं सहायता की आशा लेकर उनके पास गया उन्होंने कुछ सहायता न की और जिन बालकों का मैं विरोध करता रहा, आज वही इस संकट की घड़ी में मेरे परिवार के लोगों की सेवा में जुटे हुए हैं। उससे न रहा गया और एक कोने में बैठकर फूट-फूटकर रोने लगा। कल के नेता सुभाष ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा कि 'भाई तुम्हारा घर गन्दा था इसलिए परिवार के लोगों को हैजे ने आ दबाया। अब हमने उसकी सफाई कर दी है। एक-दूसरे के सुख-दुःख में काम आना तो मानव का कर्त्तव्य है।' इतना सुनकर हैदर खाँ ने उठकर सुभाष के पैर पकड़ लिये और बोला, 'नहीं-नहीं, घर के साथ मेरा मन भी मलिन था। आपकी सेवा ने मेरे मन के मल को धो दिया है। मैं किस मुँह से आपका धन्यवाद करूँ? खुदा करे आपकी शोहरत दुनियाँ के कोने-कोने में फैले।'

साभार- प्रेरक जीवन

सूचना सूचना सूचना

पत्रिका का आगामी अंक **''सशक्त युवा निर्माण''** नाम से प्रकाशित किया जायेगा। यह नाम पंजीकृत हुआ है। सम्पूर्ण विवरण आगामी अंक में दिया जायेगा।।

आ.वी.द.

आर्य वीर दल की स्थापना

स्वामी देवव्रत सरस्वती

किसी भी राष्ट्र, जाति और संस्था का इतिहास उसका आधार स्तम्भ होता है। भावी पीढ़ी उससे प्रेरणा लेकर कर्त्तव्य पथ पर आगे बढ़ती हैं परिस्थितिवश दैन्यावस्था में आ जाने पर भी उसका मनोबल नहीं गिरता और वह पुन: अंगड़ाई लेकर खड़ी हो जाती है। इसके विपरीत इतिहास को विस्मृत करके समृद्ध लोग भी मार्गदर्शक एवं आदर्श के अभाव में किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं। किसी का मानस बदलना है तो उसके पूर्वजों के इतिहास में उलट-फेर करके उन्हें अयोग्य घोषित कर दिया जाये तो उस राष्ट्र या जाति का मनोबल गिरने में देर नहीं लगेगी।

ऋषि दयानन्द के क्रान्तिकारी अभियान से पौराणिक हिन्दू, मुसलमान एवं अन्य मतावलंबियों में खलबली मच गई। वे सभी एकमत होकर इस क्रान्ति की ज्वाला को बुझान के लिए दौड़े, परन्तु वह अग्नि शान्त न होकर दिन-रात बढ़ती ही गई। स्वामी जी के निर्वाण के पश्चात् उनके अनुयायी और अधिक उत्साह से पाखण्ड एवं अन्य मतावलम्बी दुर्गों को ध्वस्त करने में लग गये। उनके तर्क के तीरों के सम्मुख विपक्षियों को मैदान छोड़कर भागना पड़ा। 'मरता क्या न करता' की उक्ति के अनुसार उन्होंने महापुरुषों के प्राण लेने का षड्यन्त्र रचा। अमर शहीद लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, महाशय राजपाल इसी कुचक्र के शिकार हुए।

"अति संघर्ष करे जो कोई, अनल प्रकट चन्दन से होई॥"

धर्मान्ध लोगों द्वारा अपने नेताओं के बलिदान किये जाने पर उसका प्रतिकार करने के लिए सन् 1927 ई. में महात्मा हंसराज की अध्यक्षता में दिल्ली में एक विराट महासम्मेलन हुआ। जिसके परिणामस्वरूप 26 जनवरी, 1929 ई. को आर्य रक्षा समिति के सुदृढ़ अंग के रूप में आर्य वीर दल की स्थापना की गई। उस समिति के अध्यक्ष महात्मा नारायण स्वामी ने दस हजार रुपये और दस हजार आर्यवीर एक वर्ष में इकठ्ठा करने की प्रतिज्ञा की। आर्यों में इतना उत्साह था कि कुछ ही मास में ये दोनों प्रतिज्ञायें पूरी हो गई।

इसी मध्य महाशय राजपाल का लाहौर में धर्मान्ध लोगों द्वारा वध कर दिया गया। इन्हीं परिस्थितियों में महात्मा नारायण स्वामी की अध्यक्षता में सन् 1931 ई में दूसरे आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें आर्य वीर दल की शाखा प्रत्येक प्रान्त, नगर और आर्य समाज में स्थापित करने का आदेश दिया गया जिसमें आर्य वीर दल के नियमित संचालन के लिए बलिष्ठ आर्य वीरों को अन्य स्थानों पर प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। सर्वत्र क्षात्र धर्म का प्रचार-प्रसार होने से आर्यनेताओं पर होने वाले आक्रमण रुक गये। सिंहों की दहाड़ सुन गीदड़ मादों में जा छिपे। हिन्दू एवं आर्यजनों के उत्सव, मेले, शोभायात्रा निर्विघ्न सम्पन्न होने लगे।

कालान्तर में हिन्दुओं के अन्य सामाजिक संगठानों की कुदृष्टि इस पर पड़ने लगी। उसकी विचाराधारा में शिक्षित शिक्षकों ने भी उसमें सहयोग दिया। अनेक बार सामूहिक बार उत्सवों में इन संगठनों के कार्यकर्त्ताओं ने सहयोग किया। यह सब देखकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य वीर दल का समस्त उत्तरदायित्व एक उत्साही नवयुवक श्री ओमप्रकाश त्यागी को दिया तथा सन् 1936 ई. में आर्य वीर दल के नियमों को संशोधित करके उन्हें विधिवत् स्वीकृत किया। खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है। धुन के धनी अदम्य साहसी शूरवीर का नेतृत्व पाकर आर्य वीर दल दिन दूनी-रात चौगुनी उन्नति करने लगा। सन् 1942 ई. में 400 आर्यवीरों का प्रथम शिविर बदरपुर (दिल्ली) में लगा जिसमें सारे देश से चुने हुए आर्यवीरों को एक मास तक सघन प्रशिक्षण दिया गया।

सारे देश में स्वतन्त्रता संग्राम का बिगुल बजा हुआ था। **'करो या मरो'** महात्मा गाँधी के इस उद्देश्य ये देश के नवयुवकों का खून खौल उठा। विदेशी वस्त्रों की होली जलाना, रेल की पटरियाँ उखाड़ना, टेलीफोन के खम्बों को उखाड़ना और डाकखाने तथा सरकारी कार्यालयों को अग्नि के समर्पित करना इत्यादि का अभियान सर्वत्र जोर पकड़ता गया। ऐसे अवसर पर आर्यवीरों ने बढ़-चढ़ कर इसमें हिस्सा लिया और आजादी के महासंग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने लगे। तब से लेकर हैदराबाद रियासत के भारत विलय होने तक का इतिहास आर्यवीरों के त्याग, बलिदान एवं शौर्य से भरा पड़ा है। असम की बाढ़, गुजरात भूकम्प, उत्तरकाशी भूकम्प और उड़ीसा के तूफान में आई हुई तबाही में लोगों के आवास, भोजन एवं औषधि वितरण का कार्य पूरे जोर-शोर से बिना किसी लोभ-लालच के किया। राष्ट्र की प्रत्येक आपदा के समय आर्यवीरों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसके साथ देश और आर्य समाज को जब भी आवश्यकता होती है तब-तब आर्य वीर दल बलिदान और सेवा करने के लिए हरदम तैयार रहता है। आर्य महासम्मेलनों में भोजन व्यवस्था, सुरक्षा व्यवस्था का निर्वहन कर प्रशंसनीय कार्य करके लगातार कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

साभार- सार्वदेशिक आर्यवीर दल

समय का सदुपयोग

- कंचन आर्या

प्रिय बच्चो!, आज के विषय पर चर्चा करने से पहले आपके सामने एक पहेली रखती हूँ। इसका उत्तर देने की कोशिश करना। एक बार कुछ प्रसिद्ध चित्रकारों के चित्रों की प्रदर्शनी लगी हुई थी। सबको अपनी इच्छानुसार चित्र बनाने की छूट थी। सबने अपने-अपने प्रकार से चित्र बनाये। दर्शक विविध प्रकार के सुन्दर और रंग-बिरंगे चित्रों का आनन्द लूट रहे थे। अचानक उनकी नजर एक विचित्र से चित्र पर पड़ी। चित्र बहुत ही साधारण और रहस्यमय था। वह चित्र एक छोटे वायुयान जैसी मानव-आकृति का था, जिसके सीने के दोनों ओर पंख लगे हुये थें। उसके सिर के सामने की ओर सीधे और लम्बे-लम्बे खड़े बाल थे त58था सिर पीछे की ओर से पूरी तरह गंजा था। इस चित्र को देखकर कोई न समझ पाया कि यह चित्र किसका है? बच्चो! क्या आप बता सकते हैं कि यह किसका चित्र हो सकता है। नहीं न। दर्शकों ने उत्सुकतापूर्वक जब चित्रकार से पूछा, तो उसने बताया कि यह चित्र समय का है। आश्चर्यचकित दर्शकों ने जिज्ञासावश पूछा कि यह समय का चित्र कैसे हो सकता है? समय का तो कोई आकार नहीं होता। तब चित्रकार ने उत्तर दिया कि यह सत्य है कि समय का कोई आकार नहीं, परन्तु समय के महत्त्व को बताने के लिये यह एक रूपक (Simile) के रूप में चित्र प्रस्तुत किया गया है। पूछने पर उसने स्पष्ट किया कि समय बहुत तीव्र गति से आगे बढ़ता जाता है। मानो पैरों से धीरे-धीरे न चल कर पंखों की सहायता से वायुयान से भी तीव्र गति से हवा में उड़ जाता है। इसके सामने की ओर के खड़े और लम्बे बाल संकेत कर रहे हैं कि समय के आने से पहले ही सावधान रहकर सामने से इसके बालों को पकड़ ले तो यह हाथ में आ सकता है। अन्यथा पीछे से इसे पकड़ना सम्भव नहीं होगा, क्योंकि यह गंजा है। कहने का तात्पर्य यह है कि समय आने से पूर्व ही यदि हम अपने कार्य की योजना बनाकर तदनुसार कार्य कर लेते हैं तो कम समय में भी अधिक उपयोगी कार्य करके लाभ उठा सकते हैं। यदि थोड़ी भी असावधानी हुई तो यह समय हाथ से निकल जाता है, फिर पकड़ में नहीं आ सकता। कहते हैं कि इस चित्रकार को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया था।

आज मैं इस समय के के महत्त्व को बताना चाहती हूँ। सचमुच समय प्रत्येक मानव के लिये बहुत उपयोगी है, परन्तु हम उस पर अधिक ध्यान नहीं देते। इसका कोई मूल्य न होते हुए भी यह अमूल्य है। इसीलिये कहा जाता है कि **'समय बहुत कीमती है, इसे व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिये'**। क्या आपने कभी इस बात पर विचार किया है कि यद्यपि हम इस समय के लिये कोई भी मूल्य नहीं देते, तो भी इसे बहुत कीमती या मूल्यवान् क्यों कहा जाता है? आओ, इस पर विचार करते हैं। बच्चो, आप सब अच्छी तरह जानते हैं कि पैदा होने के बाद हम सबका शरीर स्वाभाविक रूप से बढ़ता जाता है। दिन पर दिन बीतते जाते हैं और एक दिन पता चलता है एक वर्ष बीत गया, दो वर्ष बीत गये, तीन वर्ष बीत गये और इसी प्रकार 20-25 वर्ष व्यतीत होते-होते हम युवा बन गये। इस समय शरीर बहुत खूबसूरत और हृष्ट-पुष्ट हो जाता है। तब नौकरी, व्यवसाय, विवाह एवं परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाते-निभाते और समय बीतता गया और अब उम्र 40 वर्ष तक पहुँच गई है। अब अनुभव होने लगता है कि शरीर में शक्ति कम होने लगी है, उतनी चुस्ती और फुर्ती से काम नहीं कर पा रहे हैं, जितना कि 5-10 वर्ष पहले कर पाते थे। तब सब कहते हैं कि अब जवानी ढल गई है, बुढ़ापे में प्रवेश होने लगा है। खान-पान और अन्य दैनिक आचरणों में सावधानी रखनी होगी, क्योंकि इस अवस्था में आप अनेक प्रकार के रोग आक्रमण कर सकते हैं। इसके बाद कुछ वर्ष और बीतने पर पता चलता है कि आँखों की रोशनी कम होने लगी है, सुनाई भी कम दे रहा है, हाथ उतनी तेजी से काम नहीं कर पा रहे, कुछ-कुछ काँपने से लगे हैं, अब तो दौड़ भी नहीं सकते, थोड़ा अधिक चलने पर ही साँस फूलने लगता है, चेहरे के साथ-साथ शरीर की त्वचा पर झुर्रियाँ सी दिखाई देने लगी हैं, भोजन ठीक से नहीं पच रहा, दाँतों में दर्द होने लगता है और हिलने से लगे हैं। इसी प्रकार के अनेक परिवर्तन एवं रोग स्पष्ट दिखाई देने लगे हैं। तब विचार करने पर पाते हैं कि जीवन के लगभग 60-70 वर्ष तो बीत गये। अब तो बुढ़ापा आ गया है। 70 वर्ष का समय बीत गया यानि 25, 550 दिन अर्थात् 6,13,200 घंटे कैसे बीत गये, पता ही नहीं चला। अब तो जीवन समाप्त होने को है, उसकी तैयारी करनी होगी। तब निश्चित रूप से घबराहट और बेचैनी होगी और भरपूर इच्छा एवं प्रयत्न करने पर भी फिर युवावस्था जैसी ताकत और चुस्ती प्राप्त करना सर्वथा असम्भव होगा। उस समय यदि हम जीवन भर में इकट्ठी की गई सारी सम्पत्ति, जमीन, जायदाद आदि की भेंट दे दें, तो भी लाख कोशिश करने पर एक दिन तो क्या एक मिनट का भी बचपन या युवावस्था जैसा समय दुबारा प्राप्त नहीं कर सकते। अब तुम्हीं बताओ बच्चो, कि समय अमूल्य हुआ या नहीं?

बच्चो, अपने पूर्व के समय की पड़ताल करने पर यदि आप पायेंगे कि आपने अपने जीवन में जो चाहा था, सब कर लिया या करने के लिये पूरा श्रम किया, अपने लक्ष्य को पा लिया या उसके करीब पहुँच गये, तो आपको असीम सन्तोष और शान्ति अनुभव होगी। इसके विपरीत, यदि ऐसा लगा कि लक्ष्य तो कुछ और ही था और काम कुछ और ही करते रहे या दिन-रात सोते रहे या व्यर्थ में गप्पें लगाते रहें, तो आपका मन पछताने से भर जायेगा। उस समय आपको लगेगा कि काश! पहले की तरह थोड़ा-सा समय अब और मिल जाये, तो जल्दी से अपने लक्ष्य को पाने का प्रयत्न करूँगा। परन्तु उस समय सब कुछ लुटाने पर भी बीते हुये समय को वापिस नहीं लाया जा सकता। आप ही

बतायें कि यदि आप में से कोई चाहे कि एक बार फिर से 2 अक्टूबर 2012 का दिन वापिस आ जाये, तो क्या यह सम्भव है? नहीं न, किसी भी कीमत पर नहीं। अत: यह मानना ही पड़ेगा कि समय एक अमूल्य वस्तु है।

प्यारे बच्चो, आप यह भी भलीभांति जानते हैं कि हम सबके जीवन की एक सीमा है। कुछ सालों बाद यह निश्चत रूप से समाप्त हो ही जाएगा। जीवन की जो अवस्था बीत चुकी है, लाख प्रयत्न करने पर भी वह वापिस नहीं आ सकती। जो बचपन, जवानी बीत गई, वह दुबारा प्राप्त नहीं की जा सकती। बचपन की सुकुमारता (Tenderness) व भोलापन, जवानी का सौन्दर्य औ शक्ति वृद्धावस्था में प्राप्त करना किसी के वश की बात नहीं। यह विचार करने पर समय का मूल्य और अधिक बढ़ जाता है। अत: इस कीमती समय का उपयोग हमें उसी सावधानी और सतर्कता के साथ करना चाहिये, जिस सावधानी और सतर्कता से एक बहुत गरीब और कंजूस व्यक्ति अपने धन का उपयोग करता है अर्थात् एक व्यक्ति जिसके पास धन की कमी है और जो कंजूस भी है, बहुत सोच-विचार करने के बाद ही बहुत आवश्यक कार्यों में धन खर्च करता है। इसी प्रकार, हमें भी समय का उपयोग सोच-समझकर आवश्यक और अच्छे कार्यों में ही करना चाहिये। बच्चो, इस बात को सदा याद करना कि यदि हम धन का प्रयोग नहीं करते, तो वह पड़ा रह सकता है परन्तु समय का प्रयोग ठीक प्रकार से करें या न करें, यह तो अवश्य बीत ही जायेगा, पड़ा नहीं रहेगा। अत: सदा समझदारी पूर्वक इस प्रकार से कार्य करने चाहिये कि कम से कम समय में अधिक से अधिक उपयोगी कार्य हो सकें। जो हमें अपनी मंजिल की ओर ले जानें वाले हों। मुझे विश्वास है कि इस पत्र को पढ़ने के बाद आप सब और भी अधिक सावधानी से समयानुसार अपने सभी कार्यों को करेंगे और व्यर्थ के कार्यों में अपना समय नहीं गँवायेंगे। आप इस विषय में तभी सावधान रह सकते हैं, जब जीवन की कीमत को जानेंगे। अत: बच्चे, पहले से प्रतिदिन की दिनचर्या और योजना बनाकर समय रहते अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील बने रहें। यही समय का सदुपयोग कहलाता है।

विशेष सूचना

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश आगामी फरवरी-मार्च-अप्रैल माह के अन्तिम शनिवार व रविवार को दिल्ली के व्यायाम शिक्षकों एवं शाखानायकों की संयुक्त कार्यशाला आयोजित कर रहा है। इस कार्यशाला में विशेषत: बौद्धिक, शारीरिक व आध्यात्मिक प्रशिक्षण के साथ संन्ध्या-यज्ञ एवं उपासना का क्रियान्वित प्रशिक्षण दिया जायेगा। फरवरी-2018 की कार्यशाला 24 फरवरी प्रात: 11 बजे से 25 फरवरी सायं 5 बजे तक आर्य वीर दल के मुख्य कार्यालय मिंटो रोड पर आयोजित की जाएगी।

स्वास्थ्य रक्षा

(भोजन कैसे करें?)

स्वामी देवव्रत सरस्वती

ताजा भोजन करने से उचित मात्रा में पाचक रस की उत्पत्ति होकर उसका पाचन भली-भाँति होता है तथा वात आदि दोष भी शान्त होते हैं।

1. पहले किये हुए भोजन के पच जाने पर ही अगला भोजन करना चाहिए। कम से कम पाँच घण्टे का अन्तर दूसरे भोजन में होना चाहिए। अल्पाहार लेने के पश्चात् भी तीन घण्टे के अन्तर से भोजन करना उचित है। इन दोनों के मध्य में जल को छोड़ अन्य कोई खाद्य पदार्थ नहीं लेना चाहिए।
2. प्रात: काल अल्पाहार, मध्याह्न में भोजन, सांय काल पेय पदार्थ और रात्रि में पुन: भोजन करना उचित है। दो बार ही पेट भरकर खाने की अपेक्षा चार बार स्वल्प मात्रा में भोजन करना लाभदायक है।
3. आमाशय का आधा भाग अन्न से, चतुर्थ पेय पदार्थ से, शेष भाग सुखपूर्वक श्वास-प्रश्वांस लेने तथा भोजन को सरलता से उदर में गति करने के लिए छोड़ देना चाहिये।
4. भोजन खूब चबाकर खाना चाहिए। चबाने से मुख की लार भोजन में मिलकर श्वेतसार का पाचन कर देती है। अन्यथा दाँतों का कार्य आँतों को करना पड़ता है।
5. शान्त चित्त एवं प्रसन्न होकर सुन्दर, स्वच्छ स्थान पर भोजन करने से उसका पाचन सरलता से होता है। गपशप, हँसी-मजाक और क्रोध-शोक की स्थिति में भोजन करना हानिकारक है।
6. अपने प्रकृति एवं मन के अनुकूल भोजन करने से शरीर स्वस्थ रहता है। 'रुचे सो पचे।' युवावस्था में उष्ण प्रकृति के खाद्य पदार्थ मिर्च, मसाले, तेल, खटाई, चाय, कॉफी, प्याज, लहसुन आदि का परित्याग करना ही श्रेयस्कर है अन्यथा इनसे शरीर में अनावश्यक उष्णता एवं उत्तेजना होकर बल-वीर्य की क्षीणता होती है।
7. व्यायाम तथा स्नान के आधा घण्टा पश्चात् और भोजन के तीन घण्टे पश्चात् व्यायाम करना चाहिये। साँय काल का भोजन सोने से दो-तीन घण्टे पहले करना उचित है।
8. मध्याह्न के भोजन के पश्चात् दाहिने, सीधे और बाँये लेटकर विश्राम करना या वज्रासन में बैठना चाहिये। सांय काल भोजन करके कुछ भ्रमण या मनोरंजन करना उपयोगी है। भोजन के तुरंत बाद शारीरिक या मानसिक श्रम वर्जित है।
9. पानी भोजन के पश्चात् पीने से पाचक रस हल्के होकर भोजन का पाचन सम्यक् रूप से नहीं हो पाता। अत: एक घण्टे पश्चात् थोड़ा-थोड़ा करके पानी पीना चाहिये। यदि रुक्ष भोजन है या प्यास बहुत अधिक है तो बीच में कुछ पानी पी सकते हैं।
10. रात्रि के पश्चात् उष:पान (जल पीना), भोजन के पश्चात् छाछ और दिन के पश्चात् अर्थात् रात्रि के समय दूध पीना आयु वर्द्धक है।

इन सामान्य नियमों से शरीर को रोगों से दूर रखा जा सकता है।

॥ ऐसे हों लाल पैदा खेलें जो गोलियों से, भूमि को तृप्त करके श्रद्धा की झोलियों से ॥

महर्षि दयानन्द जी द्वारा लिखित अपना जन्मचरित्र

गतांक से आगे.......

फिर गुपचुप संवत् 1903 के वर्ष घर छोड़ कर संध्या के समय भाग उठा। चार कोश पर एक ग्राम था वहाँ जाकर रात्रि को ठहर कर दूसरे दिन प्रहर रात्रि से उठ के 15 कोश चला परन्तु प्रसिद्ध ग्राम सड़क और जानकारों के ग्रामों को छोड़ के बीच-बीच में नित्य चलने का प्रारम्भ किया। तीसरे दिन मैंने किसी राजपुरुष से सुना कि फलाने का लड़का घर छोड़ कर चला गया है उसको खोजने के लिये सवार और पैदल आदमी यहाँ तक आये थे। जो मेरे पास थोड़े से रुपये और अंगूठी आदि भूषण था वह सब पोपों ने ठग लिया। मुझसे कहा कि तुम पक्के वैराग्यवान् तब होगे जब पास की चीज सब पुण्य कर दो फिर उन लोगों के कहने से मैंने जो कुछ था सब दे दिया। फिर लाला भगत की जगह जो कि सायले शहर में है वहाँ बहुत साधुओं को सुन कर चला गया वहाँ एक ब्रह्मचारी मिला उसने मुझसे कहा तुम नैष्ठिक ब्रह्मचारी हो जाओ उसने मुझको ब्रह्मचारी की दीक्षा दी और शुद्ध चैतन्य मेरा नाम रखा तथा काषाय वस्त्र भी करा दिये। जब मैं वहाँ से अहमदाबाद के पास कौठ गांगड़ जो कि छोटा सा राज्य है वहाँ आया तब मेरे ग्राम के पास का जान पहचान वाला एक वैरागी मिला उसने मुझसे पूछा कि तुम कहाँ से आये और कहाँ जाना चाहते हो। तब मैंने उससे कहा कि घर से आया और कुछ देश भ्रमण किया चाहता हूँ। उसने कहा कि तुमने काषाय वस्त्र धारण करके क्या घर छोड़ दिया। मैंने कहा कि हाँ मैंने घर छोड़ दिया और कार्तिकी के मेले पर सिद्धपुर को जाऊँगा। फिर मैं वहाँ से चल कर सिद्धपुर में आके नीलकण्ठ महादेव की जगह में ठहरा कि जहाँ दण्डी स्वामी और कई ब्रह्मचारी ठहर रहे थे। उनका सत्संग और जो-जो कोई महात्मा व पण्डित मेले में सुन पड़ा उन सबके पास गया और उनसे सत्संग किया। जो मुझको कौठ गांगड़ में वैरागी मिला था। उसने फिर मेरे पिता के पास पत्र भेजा कि तुम्हारा पुत्र ब्रह्मचारी हुआ काषाय वस्त्र धारण किये मुझको मिला और कार्तिकी के मेले में सिद्धपुर को गया। ऐसा सुन के सिपाहियों के सहित पिताजी सिद्धपुर के मेले में खोज कर पता लगा के जहाँ पण्डितों के बीच में मैं बैठा वहाँ पहुँच कर मुझसे बोले कि तू हमारे कुल में कलंक लगाने वाला पैदा हुआ। जब मैंने पिताजी की ओर देख के उठ के चरण स्पर्श किया नमस्कार करके बोला कि आप क्रोधित मत हूजिये मैं किसी आदमी के बहकावे में आकर चला आया और मैंने बहुत सा दुःख पाया। अब मैं घर को आने वाला था। परन्तु अब आप आये यह बहुत अच्छा हुआ कि अब मैं साथ-साथ घर को चलूँगा। तो भी क्रोध के मारे मेरे गेरू के रंगे वस्त्र और एक तूंबे को तोड़ फार के फेंक दिये और वहाँ भी बहुत कठिन बातें कह कर बोले कि तू अपनी माता की हत्या लिया चाहता है। मैंने कहा कि अब मैं घर को चलूँगा। तो भी मेरे साथ-साथ सिपाही कर दिये कि क्षण भर भी इसको अकेला मत छोड़ो और इस पर रात्रि को भी पहरा रखो। परन्तु मैं भागने का उपाय देख रहा था। सो जब तीसरी रात के तीन बजे के पीछे पहरे वाला बैठा-बैठा सो गया उसी समय मैं लघुशंका का बहाना करके भागा। आधा कोस पर एक मन्दिर के शिखर में एक वृक्ष से सहारे से चढ़ और जल का लोटा भर के छिप कर बैठा रहा। जब चार बजे का अमल हुआ तब उन्हीं सिपाहियों में से एक सिपाही मालियों से मुझको पूछता सुना। तब मैं और भी छिप गया ऊपर बैठा सुनता रहा वे लोग ढूँढ कर चले गये। मैं उसी मन्दिर की शिखर में दिन भर रहा। जब अन्धेरा हुआ तब उस पर से उतर सड़क को छोड़ के किसी से पूछा कि दो कोस पर एक ग्राम था उसमें ठहर के अहमदाबाद होता हुआ बड़ोदरे शहर में आकर ठहरा। वहाँ चेतन मठ में ब्रह्मानन्द आदि ब्रह्मचारी और सन्यासियों से वेदान्त विषय की बहुत बातें कीं।

क्रमशः.........

पृष्ठ 3 का शेष...

साथ ही महाराणा प्रताप के ओजस्वी व देशभक्ति संघर्ष को भी आर्यवीरों के सम्मुख रखा गया। इसके बाद सभी आर्यवीरों ने तैयारी के साथ श्री आचार्य जयन्त जी के सानिध्य में जंगल भ्रमण हेतु प्रस्थान किया, घने जंगल में जाने से पहले श्री आचार्य जी ने सभी को जंगल के नियम व सावधानियों से अवगत् कराया। आचार्य जी ने जंगल भ्रमण के दौरान आर्यवीरों को जंगल के महत्व व जंगलों से प्राप्त जड़ी बूटियों का भी ज्ञान कराया। इस बड़ी यात्रा में आर्यवीरों ने अनेक अनुभव प्राप्त किये व पहाड़ों की कन्दराओं में सायं सन्धि वेला में श्री रोहताश आर्य एवं दिनेश आर्य जी के सानिध्य में सन्ध्या उपासना की। इसके पश्चात् डॉ० सन्दीप आर्य द्वारा पुत्र-सुपुत्र, श्रेष्ठ आर्यवीर के गुण, ब्रह्मचर्य रक्षा के विषयों पर चर्चा की गई। इसके साथ ही सभी आर्यवीरों को आजीवन शाकाहार अपनाने का संकल्प भी दिलाया गया। प्रातः यज्ञ एवं प्रातःराश के पश्चात् आपसी तालमेल, स्वयं की जिम्मेदारी का निर्वहन व शाखाओं के विस्तार पर चर्चा की गई। इस शिविर के सभी शिविरार्थियों की आवासीय व्यवस्था आदि का सहयोग श्रीमान् जयन्त जी आर्य-संरक्षक गुरुकुल महाविद्यालय कण्व आश्रम, द्वारा प्रदान की गई।इस प्रकार के आध्यात्मिक शिवरों के माध्यम से ही आर्य वीर दल के कर्मठ सहयोगी, कार्यकर्त्ता तैयार किये जाते हैं जो भविष्य में दल के प्रचार-प्रसार में अपना अमूल्य समय देते हैं।

॥ जिंदगी ऐसी बना बशर जिन्दा रहे दिलशाद तू, जब कभी दुनिया से जाये तो दुनिया को याद आये तू ॥

व्यवहारभानु

ऐसा किस मनुष्य का आत्मा होगा कि जो सुखों को सिद्ध करने वाले व्यवहारों को छोड़कर उल्टा आचरण करने में प्रसन्न होता हो। क्या यथायोग्य व्यवहार किये बिना किसी को सर्वसुख हो सकता है? क्या कोई मनुष्य अपनी और पुत्रादि सम्बन्धियों की उन्नति न चाहता हो? क्या कोई मनुष्य अच्छी शिक्षा से धर्मार्थ, काम और मोक्षफलों को सिद्ध नहीं कर सकता? और इसके बिना पशु के समान होकर दु:खी नहीं रहता है? इसलिए सब मनुष्यों को उचित है कि श्रेष्ठ शिक्षा और धर्मयुक्त व्यवहारों से वर्त्तकर सुखी होके दु:खों का विनाश करे। इसलिए सब मनुष्यों को सुशिक्षा से युक्त होना आवश्यक है। इसलिए यह बालक से लेके वृद्धपर्यन्त मनुष्यों के सुधार के अर्थ व्यवहार सम्बन्धी शिक्षा का विधान किया जाता है। इसलिए यहाँ वेदादि शास्त्रों के प्रमाण भी कहीं-कहीं दिखेंगे। क्योंकि उनके अर्थो को समझने का ठीक-ठीक सामर्थ्य बालकादि का नहीं रहता। जो विद्वान प्रमाण देखना चाहे तो वेदादि अथवा मेरे बनाये ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थों में देख लेवें।

प्रश्न- कैसे पुरुष पढ़ाने और शिक्षा करनेहारे होने चाहिये?

उत्तर- पढ़ाने वालों के लक्षण-

जिनको परमात्मा और जीवात्मा का यथार्थ ज्ञान, जो आलस्य को छोड़कर, उद्योगी, सुख-दु:खादि का सहन, धर्म का नित्य सेवन करने वाला, जिसको कोई पदार्थ धर्म से छुड़ाकर अधर्म की ओर न खेंच सके, वह **पण्डित** कहाता है।।1।।

जो सदा प्रशस्त धर्मयुक्त कर्मों का करने और निन्दित अधर्मयुक्त कर्मों को कभी न सेवनेहारा, जो न कदापि ईश्वर, वेद और धर्म का विरोधी और परमात्मा, सत्यविद्या और धर्म में दृढ़ विश्वासी है, वही मनुष्य **पण्डित** के लक्षणयुक्त होता है।।2।।

जो वेदादिशास्त्र और दूसरे के कहे अभिप्राय को शीघ्र ही जानने, दीर्घकाल पर्यन्त वेदादिशास्त्र और धार्मिक विद्वानों के वचनों को ध्यान देकर सुनके, ठीक-ठीक समझ, निरभिमानी शान्त होकर, दूसरों से प्रत्युत्तर करने, परमेश्वर से लेके पृथिवी पर्यन्त पदार्थों को जान के उनसे उपकार लेने में तन-मन-धन से प्रवृत्त होकर काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोकादि दुष्ट गुणों से पृथक वर्तमान, किसी के पूछने व दोनों के संवाद में बिना प्रसंग के उपयुक्त भाषाणादि व्यवहार न करने वाला है, यही मनुष्य पण्डित का प्रथम बुद्धिमत्ता का लक्षण है।।3।।

जो मनुष्य प्राप्ति होने के अयोग्य पदार्थों की कभी इच्छा नहीं करते, अदृष्ट वा किसी पदार्थ के नष्ट-भ्रष्ट हो जाने पर शोक करने की अभिलाषा नहीं करते, और बड़े-बड़े दु:खों से युक्त व्यवहारों की प्राप्ति में भी मूढ़ होकर नहीं घबराते हैं वे मनुष्य पण्डितों की बुद्धि से युक्त कहाते हैं।।4।।

जिसकी वाणी सब विद्याओं में चलने वाली, अत्यन्त अद्भुत विद्याओं की कथाओं को करने, बिना जाने पदार्थों को तर्क से शीघ्र जानने-जनाने, सुनी-विचारी विद्याओं को सदा उपस्थित रखने और जो सब विद्याओं के ग्रंथों को अन्य मनुष्यों को शीघ्र पढ़ाने वाला मनुष्य है वही पण्डित कहाता है।।5।।

क्रमशः...

आर्योद्देश्यरत्नमाला

1. **ईश्वर**- जिसके गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरुप सत्य ही हैं, जो केवल चेतनमात्र वस्तु है तथा जो अद्वितीय, सर्वशक्तिमान, निराकार, सर्वत्र व्यापक, अनादि, और अनन्त आदि सत्यगुण वाला है और जिसका स्वभाव अविनाशी, ज्ञानी, आनन्दी, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु और अजन्मादि है। जिसका कर्म जगत् की उत्पत्ति, पालन और विनाश करना तथा सब जीवों को पाप-पुण्य के फल ठीक-ठीक पहुँचाना है, उसको ईश्वर कहते हैं।

2. **धर्म**- जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपातरहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए यही एक मानने योग्य है, उसको धर्म कहते हैं।

3. **अधर्म**- जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा को छोड़कर और पक्षपातसहित अन्यायी होके, बिना परीक्षा करके अपना ही हित करना है, जो अविद्या, हठ, अभिमान, क्रूरतादि दोषयुक्त होने के कारण वेद विद्या से विरुद्ध है, और सब मनुष्यों को छोड़ने के योग्य है, वह अधर्म कहाता है।

4. **पुण्य**- जिसका स्वरूप विद्यादि शुभ गुणों का दान और सत्य भाषणादि सत्याचार का करना है, उसको पुण्य कहते हैं।

5. **पाप**- जो पुण्य से उल्टा और मिथ्याभाषणादि करना है, उसको पाप कहते हैं।

6. **सत्यभाषण**- जैसा कुछ अपने आत्मा में और असम्भवादि दोषों से रहित करके सदा वैसा ही बोले, उसको सत्यभाषण कहते हैं।

7. **मिथ्याभाषण**- जो कि सत्यभाषण अर्थात् सत्य बोलने के विरुद्ध है, उसको मिथ्याभाषण कहते हैं।

8. **विश्वास**- जिसका मूल अर्थ और फल निश्चय करके सत्य ही हो, उसका नाम विश्वास है।

9. **अविश्वास**- जो विश्वास से उलटा है, जिसका तत्व अर्थ न हो, वह अविश्वास कहाता है।

10. **परलोक**- जिसमें सत्यविद्या से परमेश्वर की प्राप्ति हो और उस प्राप्ति से इस जन्म व पुनर्जन्म और मोक्ष में परमसुख प्राप्त होना है, उसको परलोक कहते हैं।

क्रमशः....

।। उठो दयानन्द के सिपाहियों, समय पुकार रहा है। देशद्रोह का विषधर फन फैला फुंकार रहा है ।।

वेद स्वाध्याय

-स्वामी देवव्रत सरस्वती

इनका कभी विश्वास न करें

चतुरश्चिद्ददमानाद्बिभीयादा निधातोः।

न दुरुक्ताय स्पहयेत्।। (ऋ० १।४१।९)

अर्थ- (चतुरः) हिंसक, शाप देने वाला (चित्) और (ददमानात्) विषादि देने वाला इनसे (आ) सभी ओर से (बिभीयात्) भयभीत, सशंकित रहे। (निधातोः) चोरी, तस्करी, का माल छिपाने वाले और (दुरुक्ताय) कुवचन बोलने वाले से न (स्पृहयेत्) मित्रता न रखें।

आकाश से पानी की बूँद जब नीचे भूमि पर गिरती है तो उसकी जिसके साथ संगति होती है, उसका वैसा ही रूपान्तरण हो जाता है। नीतिकार कहते हैं- **सन्तप्तायसि संस्थितस्य पयसो नामापि न ज्ञायते। मुक्ताकारतया तदेव नलिनीपत्र स्थितं राजते।।**

स्वात्यां सागरसीमसम्पुटगतं तज्जायते मौक्तिकं प्रायेणाधममध्यमोत्तम गुणः संसर्गतो जायते।। नीतिशतक।।

पनी के बूँद का पते तवे पर गिरने से नामोनिशान भी नहीं रहता। जब वही कमल के पत्ते पर स्थित होती है तो मोती के समान चमकती है। स्वाति नक्षत्र में बादलों से बिरने वाली बूँद जब सीप के मुख में पड़ जाती है तो मोती बन जाती है। व्यक्ति में प्रायः उत्तम, मध्यम, अधम गुणों को विकार संगति से ही होता है। वह जैसी संगति करेगा वैसा ही बन जायेगा।

मन्त्र में कहा कि अपना कुशल चाहने वालों को दिन लोगों की संगति नहीं करनी चाहिये। जैसे जुए के चार पासों को हाथ में लिये हुये जुआरी से दूसरा जुआ खेलने वाला भयभीत रहता है कि न जाने पासे क्या गुल खिलायेंगे वैसे ही इन चार प्रकार के लोगों के साथ मित्रता करते समय सदा सावधान रहना चाहिये। क्योंकि ये लोग विश्वासघात कर हमारा अहित भी कर सकते हैं। इनसे उपेक्षा या दूरी बनाये रखना ही अच्छा है।

१. चतुरः- [चतृहिंसायाम्] हिंसक प्रवृत्ति के लोग जो बिना किसी कारण निरपराध प्राणियों की हिंसा करने में लगे रहते हैं अथवा हिंसा की प्रवृत्ति को बढ़ावा या समर्थन देते हैं। इनकी संगति में रहने से दूसरे लोगों की प्रवृत्ति भी हिंसक बन सकती है-

असतां संदोषेण साधवो यान्ति विक्रियाम्। दुर्योधनप्रसङ्गेन भीष्मो गोहरणेः गतः।।

दुर्योधन के साथ रहने से भीष्म पितामह भी विराट् के यहाँ गाय चुराने के लिये गये।

ऐसे लोगों से न तो दोस्ती और न ही दुश्मनी मोल लेनी चाहिये। इनसे उपेक्षा भाव रखना ही अच्छा है। इसी भाँति जो आह भरते या शाप अर्थात् किसी का अनिष्ट चिन्तन करने वाले हैं, उनसे भी सावधान रहना चाहिये। कई बार इनके मुख से निकले वचन अनिष्ट करने वाले हो जाते हैं।

२. ददमानात्ः- दूसरे वे लोग हैं जो अवसर आने पर विश्वासघात कर देते हैं अथवा भोजन, जल आदि में विषाक्त पदार्थ मिला देते हैं। वे सामने बहुत ही मीठा बोलते हैं और देवता के समान दिखाई देते हैं, परन्तु इनके मन में विष भरा होता है। ऐसे लोगों से बहुत ही सावधान रहने की आवश्यकता है क्योंकि इन पर अधिक विश्वास रखना कई बार मृत्यु का कारण भी बन जाता है, इसलिये कहा है-

न विश्वसेदविश्वस्ते विश्वस्तेऽपि न विश्वसेत्। विश्वासादुत्पन्नोऽग्निर्दहति समूलान्यपि।।

जो विश्वास पात्र नहीं है, उन पर तो विश्वास करना ही नहीं चाहिये। जो विश्वास के योग्य हैं, उन पर भी पूरा विश्वास न करे क्योंकि विश्वास से उत्पन्न अग्नि मूल को भी जला देती है।

3. निधातोः- ये वे लोग हैं जो तस्करी या अन्य दूसरे प्रकार से अवैध सामान को छिपाकर रखते हैं अथवा मादक पदार्थ, प्रतिबन्धित सामान या जिस वस्तु की कमी हो जाये, उसको भूमिगत कर उसकी कई गुणा कीमत वसूलने की फिराक में रहते हैं। सामाजिक दृष्टि से इनकी गणना तस्करों में होती है। इनका तन्त्र बहुत विस्तृत होता है और राजकीय अधिकारी भी इनके सम्पर्क में रहते हैं क्योंकि उनका भी प्रतिशत निश्चित होता है। इनसे सम्बन्ध बनाये रखने पर शक की सूई इधर भी घूम जाती है। चोर का भाई चोर ही माना जाता है।

4. न दुरुक्ताय स्पृहयेत्- दुर्वचन बोलने वाले से मित्रता न करें। इनके कारण कई बार अपयश का भागी बनना पड़ जाता है। सर्प के मुख में विष रहता है। बिच्छू, ततैया आदि के पिछले भाग में विष रहता है, परन्तु दुर्जन की रग-रग में विष भरा होता है। जंगल, पर्वत या दुर्गम स्थानों पर रहना अच्छा है परन्तु दुष्ट व्यक्ति के संग इन्द्र के भवन में रहना भी हितकर नहीं है।

दुर्जनः परिहर्त्तव्यो विद्ययालंकृतोऽपि सन्। मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयंकरः।।

दुर्जन व्यक्ति चाहे विद्या या दूसरे गुणों से भूषित हो फिर भी उसका परित्याग करना ही उचित है। मणि से भूषित सर्प क्या भयंकर नहीं होता?

क्रमश..........

प्रान्तीय बैठक सम्पन्न

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश की प्रान्तीय बैठक रविवार दिनाँक 17.12.2017 को आर्य समाज मोती नगर एफ ब्लॉक में सम्पन्न हुई। बैठक में मुख्यत: स्वामी श्रद्धानन्द शोभायात्रा के अन्तर्गत आर्य वीर दल की भागीदारी व व्यवस्थाओं में सहयोग हेतु चर्चा की गई। श्री जितेन्द्र भाटिया जी ने निवेदन किया कि आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के माध्यम से एक स्वागत मंच की व्यवस्था की जाये ताकि विभिन्न क्षेत्रों से आये आर्यजनों का स्वागत किया जा सके। बैठक की अध्यक्षता दल के संचालक श्री जगवीर आर्य जी ने की। अन्त में शान्ति पाठ के साथ बैठक को समाप्त किया गया। सभी के लिए आर्य समाज मोती नगर की ओर से जलपान व भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गई।

वाचस्पति आर्य (प्रचार मन्त्री, आ.वी.द.दि.प्र.)

योग के आठ अंग

गतांक से आगे.........

2. सत्य- सत्य का अर्थ है-मन, वचन और कर्म में एकरूपता। अर्थात् अर्थानुकूल वाणी और मन का व्यवहार होना, जैसा देखा और अनुमान करके बुद्धि से निर्णय किया अथवा सुना हो, वैसा ही वाणी से कथन कर देना और बुद्धि में धारण करना।

मनुस्मृति में कहा गया है-सत्य, मित एवं हित भाषी हो।

सत्यम् ब्रुयात्, प्रियं ब्रुयात् मा ब्रुयात् सत्यमप्रियम्॥

अर्थात् सत्य बोले, परन्तु प्रिय शब्दों में बोले, अप्रिय सत्य न बोलें। परन्तु प्रिय लगने के लिए असत्य भाषण न करें, ऐसा पुरातन विधान है। जैसे नेत्रहीन को अन्धा कह देना सत्य है, चोर को चोर कह देना भी सत्य है-किन्तु यह अप्रिय सत्य है।

मुण्डकोपनिषद कहता है- सत्यमेवजयते नानृतं। अर्थात् सत्य की जीत होती है, असत्य की नहीं।

आयुर्वेद चरक सूत्र में कहा गया है- **ऋतं ब्रूयात्- सत्य बोलना चाहिए।**

महाभारत शांतिपर्व- सत्य बोलना अच्छा है, परन्तु सत्य में भी ऐसी बोली बोलना उचित है जिससे सब प्राणियों का वास्तविक हित होता है वह हमारी नजरों में सत्य है।

पतंजलि योगसूत्र में कहा गया है-

सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्। 2.36

अर्थात् सत्य की प्रतिष्ठा होने पर वाणी और विचारों में क्रिया फल दान की शक्ति उत्पन्न हो जाती है। ऐसा व्यक्ति जो कुछ भी बोलता है, वह फलित होने लगता है अर्थात् वाक् सिद्ध हो जाता है।

3. अस्तेय- स्तेय का अर्थ है- अनधिकृत पदार्थ को अपना लेना। इसे भी बुद्धि, वचन और कर्म से त्याग देना अस्तेय है।

शांडिल्योपनिषद् के 1.1 श्लोक में कहा गया है-

अस्तेलयं नाम मनोवाक्, कायकर्मभि परद्वयेमषु निस्पृहता।

अर्थात् शरीर, मन और वाणी द्वारा दूसरों के द्रव्य की इच्छा न करना अस्तेय कहलाता है।

याज्ञवल्क्य संहिता में कहा गया है-

मनसा वाचा कर्मणा परद्रव्येषु निस्पृाह।
अस्तेवयनिति सम्प्रयोक्तं ऋषिभि तत्त्व दर्शिभि॥

अर्थात्- मन, वचन और कर्म से दूसरे के द्रव्य की इच्छा न करना अस्तेय है। तत्वदर्शी ऋषियों ने ऐसा ही कहा है।

योग सूत्र में अस्तेय सिद्धि के विषय में कहा है-

अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नो प्रस्थानम्। 2.37 अर्थात् अस्तेय की दृढ़ स्थिति होने पर सर्व रत्नों की प्राप्ति होती है।

4. ब्रह्मचर्य- मन को ब्रह्म या ईश्वर परायण बनाये रखना ही ब्रह्मचर्य है। वीर्य शक्ति की अविचल रूप में रक्षा करना या धारण करना ब्रह्मचर्य है।

महर्षि व्यास ने लिखा है-

ब्रह्मचर्य गुप्तेन्द्रियस्योरपस्थरस्य संयम।

अर्थात् गुप्त इन्द्रिय के संयम का नाम ब्रह्मचर्य है।

पतंजलि योगसूत्र में कहा गया है-

ब्रह्मचर्यपतिष्ठायां वीर्यलाभः। 2.38

अर्थात् ब्रह्मचर्य की प्रतिष्ठा होने पर साधक को वीर्य लाभ होता है। वीर्य लाभ होने से साधना के अनुकूल गुण समूह पैदा होते हैं। जिससे योगाभ्यासी को आत्मज्ञान प्राप्त होता है।

5. अपरिग्रह- संचय वृत्ति का त्याग अपरिग्रह है।

विषयों के अर्जन में, रक्षण उनका क्षय, उनके संग और उनमें हिंसादि दोष को विषयों को स्वीकार न करना ही अपरिग्रह है।

इन्द्रियाणां प्रसंगेन दोषमृच्छत्य संशयम्।
सन्निसम्यण तु तान्येछव ततः सिद्धिं नियच्छित॥ मनुस्मृति 2.13

अर्थात्- इन्द्रियों के विषयों में आशक्त होने से व्यक्ति निःसंदेह दोषी बनता है परन्तु इन्द्रियों को वश में रखने से विषयों के भोग से पूर्ण विरक्त हो जाता है। ऐसे आचरण से अपरिग्रह की सिद्धि होती है।

पूर्ण अपरिग्रह को प्राप्त साधक में काल-ज्ञान सम्बन्धी सिद्धि आ जाती है। पतंजलि योगसूत्र में कहा गया है-

अपरिग्रहस्थैर्य जन्मदृकथन्ता सम्बोध। 2.39

अर्थात् अपरिग्रह के स्थिर होने से जन्म-जन्मान्तर का ज्ञान प्राप्त होता है। इसका अर्थ हुआ कि पूर्वजन्म में हम क्या थे, कैसे थे? इस जन्म की परिस्थितियाँ ऐसी क्यों हुईं? हमारा भावी जन्म कब, कहाँ, कैसा होगा? इस ज्ञान का उदय होना अपरिग्रह साधना द्वारा ही सम्भव है।

"युवा निर्माण" पत्रिका हेतु सदस्य बनें

"युवा निर्माण" पत्रिका के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में योगदान देने हेतु पत्रिका को व्यक्ति-व्यक्ति, घर-घर की आवाज बनाने के लिए इस पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनें। वार्षिक शुल्क मात्र 150/- रुपये है।

आवश्यक सूचना

आर्य वीर दल के इतिहास से सम्बन्धित आपके पास कोई लेख/पूर्व स्मृतियाँ हैं जो आर्य वीर दल में आने वाली पीढ़ियों को उसका लाभ पहुँचा सके, वह सब दल के ईमेल- aryaveerdaldelhipradesh@gmail.com या दल के मुख्य कार्यालय पर विषय को टाईप करवाकर भेज सकते हैं। आप वॉइस रिकॉर्डिंग के माध्यम से भी वाट्सऐप पर भेज सकते हैं। वाट्सऐप नं- 9990232164 है।

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश का प्रयास है कि पूरे भारत में दल के गणवेश में एकरूपता हो। इस हेतु किसी भी प्रान्त को दल का गणवेश चाहिए तो वह आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश से सम्पर्क कर सकता है।
सम्पर्क सूत्र- 9810754638

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश अपने कार्यों को दल के website : www.aryaveerdal.org व फेसबुक अकाउंट Arya Veer Dal Delhi Pradesh पर अपलोड करता है। आप सभी आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के इन दोनों पेजो से जुड़े व उसको लाईक और शेयर करें।

"अनुपम दिनचर्या एवं गीताञ्जलि"

संकलनकर्त्ता- श्री दिनेश आर्य

यह सुन्दर कृति आप आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के मुख्य कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं। सम्पर्क सूत्र-
9810754638, 9990232164

दल को आर्थिक सहयोग देने हेतु-

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश, कॉर्पोरेशन बैंक
खाता सं.-210600101005031,
IFSC- CORP0002106
ब्रांच-वसुन्धरा, गाजियाबाद

(संस्था को दी गई दानराशि आयकर की धारा 80जी के अन्तर्गत कर मुक्त है)
आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश, आर्यसमाज मिण्टो रोड, डी.डी.यू.मार्ग, निकट-रणजीत सिंह फ्लाईओवर, नई दिल्ली-2 से प्रकाशित एवं 10/63 (i) क्रिएटिव प्लैनेट, कीर्ति नगर ओद्यो. क्षेत्र, नई दिल्ली-110015 द्वारा मुद्रित
Email : aryaveerdaldelhipradesh@gmail.com | Web : www.aryaveerdal.org
सम्पादक : जगवीर आर्य 9810264634 | सहसम्पादक : बृहस्पति आर्य 9990232164 | व्यवस्थापक : जितेन्द्र भाटिया 9811322155
संस्था के समस्त अधिकारी संस्था में अवैतनिक सेवा प्रदान करते हैं

प्रेषित ____________________